REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

राष्ट्रीय एकता और हिंदी बाल कहानी

भागिरथ चौधरी
हिन्दी विभाग,एम0एम0टी0एम0 कॉलेज,दरभंगा

सारांशः

कहानी गद्य रचना की कथा–संपृक्त एक ऐसी विधा है जिसमें घटनाओ, कार्य–कलापों, संवादों आदि के कलात्मक ऐक्य के अर्न्तगत रचनाकार किसी भी वैचारिक पक्ष को उद्घाटित करता है। कहानीकार का चिंतन उसकी रचनाओं के लिए पार्श्वभूमि का निर्माण करता है। बाल कहानी में रचनाकार एक सरलता, सहजता, सादगी के साथ बालोपयोगी भाषा में किसी लक्ष्य को सामने रखते हुए संदेश–तत्त्व को पूर्ण सजगता के साथ अप्रत्यक्ष रूप से इंगित करता है। बाल साहित्य का प्रमुख ध्येय बच्चों का मनोरंजन करना है, लेकिन मनोंरंजन के साथ–साथ कोई संदेश भी प्रच्छन्न रूप से विद्यमान रहता है। कुशल लेखक उसे कभी मुखरित नहीं होने देता, वह कहानी की कथावस्तु अथवा पात्रों का चरित्र–विकास इस ढ़ंग से करता है कि परोक्ष रूप से उसके विचारों को समझने में पाठक को सहायता मिलती है। कहा जा सकता है कि चाहे बाल कहानी में प्रमुख तत्त्व मनोरंजन एवं कुतुहल रहता है लेकिन साथ ही पठनीय सामग्री भी उपस्थित रहती है।

प्रस्तावनाः

स्वतंत्रतापूर्व बाल कहानी में राष्ट्रीयता और आदर्श का स्वर भिन्न था। स्वतंत्रता से पूर्व जिस प्रकार की राष्ट्रीयता थी और जनता से जैसी अपेक्षाएं थीं, वैसी स्वातं□योत्तर साहित्य में नहीं। वह सर्वथा अलग रूप से दिखाई देती है। स्वतंत्रता पूर्व के सुपरिचित बाल साहित्यकार जिन्होंने राष्ट्रीय एकता पर आधारित सरल भाषा में बच्चों के लिए जो भी कहानियां लिखीं उनमें राष्ट्रीय एकता, मातृभूमि वंदना, देशप्रेम, देश के लिए प्राणोत्सर्ग करने के लिए प्रेरित करने वाले कथानक की कहानियाँ हैं। इस कालखंड में बच्चों की अपनी भावनाओं, आकांक्षाओं एवं कल्पनाओं की उड़ान वाली कहानियाँ कम लिखी गई। बच्चों के लिए उपादेय सामग्री पर ध्यान अधिक रखा गया। बच्चों के विकास के एक सशक्त माध्यम के रूप में बाल साहित्य के महत्त्व को बहुत थोड़े बुद्धिजीवी लोग ही समझ सकते थे।

स्वतंत्रता के बाद यानी 1947 के बाद देश का अपना संविधान बना जिसमें एक वर्ग, वर्णभेद–विहीन समाज की स्थापना का लक्ष्य रखा गया। धर्मनिरपेक्षता की नीति बनी, जिसके परिणाम स्वरूप हिंदू–मुस्लिम विवाद भी सुलझने लगे। परस्पर एक सौहार्द्र का वातावरण बनने लगा। भारत को अखंड राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित करने की कल्पना को साकार करने हेतु प्रयास होने लगे। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने के प्रस्ताव के साथ–साथ अन्य भाषाओं के प्रति सम्मान को भी बरकरार रखते हुए उन पर हिंदी जबरदस्ती न थोपने के कारण राज्यों और केंद्र में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण निर्मित हुआ। स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद बच्चों की बढ़ती हुई रूचि को देखते हुए विविध विषयों की अनेक कहानियाँ लिखी गई। पौराणिक, ऐतिहासिक तथा परिकथाओं के अतिरिक्त दैनिक जीवन की यथार्थवादी कहानियाँ और वैज्ञानिक कहानियाँ भी लिखी गई। देश और समाज की परिस्थितियों में परिवर्तन होने पर राष्ट्रीय भावना के आधार विषय भी बदले। राष्ट्रीय भावना में देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत कहानियों के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता की कहानियाँ भी लिखी गई। ऐसी प्रेरक, उद्बोधक एवं उत्साहवर्धक रचनाओं ने निश्चय ही राष्ट्रीय एकता को दृढ़ता प्रदान की। प्रकृति भी उपकरण बनी। विविध

रंग–रूप–गंध के उपवन के रूप में तो कहीं नाना रूपात्मक पशु–पक्षी जगत् के प्रतीक में एक राष्ट्र की कल्पना की गई।[1]

पशु–पक्षियों के प्रति बालकों के मन में अत्यधिक आकर्षण होता है। इनके प्रति स्वाभाविक प्रेम–सद्भाव होता है। पशु–पक्षी जगत् की कहानियों में सत्य मानव–जीवन का ही होता है, पर उसमें पशु–पक्षियों को पात्र रूप में रखा जाता है। भिन्न–भिन्न क्रियाएँ बालक को सुखद आश्चर्य द्वारा आनंद प्रदान करती हैं। अनेक नए–पुराने बाल साहित्यकारों ने ऐसी कहानियाँ लिखी हैं। डॉ. मनोहर वर्मा का बाल साहित्य के सर्वतोमुखी विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने स्वयं तो बाल साहित्य बहुतायत से लिखा, एक संपादक के रूप में औरों से भी खूब लिखवाया। 'मधुमती' (मासिक) राजस्थान का मनोहर वर्मा के संपादकत्व में प्रकाशित बाल साहित्य विशेषांक तो पूरा एक संग्रहणीय ग्रंथ है उनकी लेखनी आज भी सक्रिय है। उन्होंने 'बालहंस' पत्रिका का निरंतर कई वर्षो तक सफल संपादन किया। 'बालहंस' में प्रकाशित उनकी एक कहानी 'चूहा–बिल्ली जिंदाबाद' को यहाँ उद्धृत करना चाहूँगी जिसमें राष्ट्रीय एकता को छिन्न–भिन्न करने वाले आपसी वैमनस्य को दर्शाया गया है। यह कहानी प्राणी–जगत् की दो विभिन्न जातियों 'चूहा' और 'बिल्ली' के पीढ़ियों से चलते आ रहे वैर–विरोध पर आधारित है। इसमें बताया गया है कि आपसी झगड़ों और कलह से राष्ट्रीय एकता को कैसे क्षति पहुँचती है। ऐसी स्थितियों पर बुनी इस कहानी में देश की शांति और एकता को बनाए रखने के लिए सभी का सहयोग आवश्यक माना है। विशेष रूप से युवाओं को प्रयासरत दिखाया है। 'चूहा नगर' में युवा चूहों के प्रयासों से पुराने चल रहे झगड़े, कलह और भेद–भाव समाप्त होते हैं और एकता स्थापित होती है।[2]

पशु–पक्षियों के माध्यम से संवाद करनेवाली गोविन्द शर्मा की एक ऐसी ही कहानी 'सबका देश एक है' है। बाल नाटककार एवं कहानीकार गोविन्द शर्मा ने विविध–विषयों पर अनेक कहानियाँ लिखी हैं। 'सबका देश एक है' चिड़ियाघर के शेर, चीता, बाघ, लोमड़ी, ऊँट, चिड़िया आदि विभिन्न पक्षियों की ऐसी कहानी है जिसमें 'लोमड़ी' के भड़काने से सभी भूख–हड़ताल पर बैठ जाते हैं कि सबसे छोटे आकार की मामूली सी चिड़िया के नाम पर हमारे घर का नामकरण क्यों हैं? यहाँ तो विशालकाय हाथी, शेर, चीता रहते हैं। उनकी शिकायत पर चिड़ियाघर का मैनेजर शेर के पिंजरे पर शेर घर, हाथी के पिंजरे पर हाथी घर, ऊँच के पिंजरे पर ऊँट घर लिखवा देता है। अलग–अलग घर होने पर सब केवल अपने घर का ही ध्यान रखते हैं कोई व्यवस्था या अनुशासन नहीं रहता। झगड़े और भी बढ़ जाते हैं। आपस में फिर से सभी सलाह करते हैं और शेर मैनेजर से कहता है कि पहले हम सब मिलजुल कर रहते थे और पूरे चिड़ियाघर को अपना घर कहते थे। लोमड़ी के बहकावे में आकर हम सब अलग–अलग हो गए। अब हम चाहते हैं कि फिर से हमारे देश को चिड़ियाघर कहा जाए ताकि हम सब इसे अपना घर समझ सकें और कह सकें कि सबका देश एक है।

बाल साहित्य लेखन, शोध एवं आलोचना के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले युवा बाल साहित्यकार डॉ. नागेश पांडेय के अनेक कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। राष्ट्रीय एकता पर आधारित उनकी एक कहानी तीन रंगों की 'तिरंगा पतंत' है जिसके माध्यम से प्रतीकात्मक रूप से बच्चों में एकता और राष्ट्र के प्रतीकों के प्रति सम्मान का भाव दर्शाया है। बच्चे तिरंगा पतंग को देखकर अपनी मस्ती और होड़ को भूलकर अपनी–अपनी पतंगे एक ओर रख देते हैं और अपने साथी टिल्लू का उत्साहवर्धन करते हुए 'तिरंगा पतंग' को खूब ऊँचा करने के लिए गाते हैं, 'झंडा ऊँचा रहे हमारा झंडा उड़ता रहे हमारा'।[3]

लम्बे समय से बाल साहित्य लेखन से जुड़ी सुकीर्ति भटनागर ने बालकथा लेखन में विशेष ख्याति अर्जित की है। उनकी एक कहानी 'मुन्ना' भी इसी भावात्मक एकता का सुंदर उदाहरण है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि साहित्य ने भाषा, क्षेत्र, धर्म, जाति आदि से ऊपर उठकर बंधुत्व के मूल्य को व्यापक धरातल पर आत्मसात् किया है। इस विषय में समरसतापूर्ण उन्नति के अभिलाषी विष्णु प्रभाकर जी के कहानी–संग्रह 'मेरा वतन' का उल्लेख करना चाहूंगी जिसकी सभी बीस कहानियाँ इसी भावात्मक सौहार्द की कहानियाँ हैं। जाति, धर्म, सम्प्रदाय जैसे फोड़े राष्ट्र के शरीर में जो मवाद भरकर उसे नष्ट करने का प्रयास करते हैं उसके उपचार को इन कहानियों में देखा जा सकता है। 'मेरा वतन' की कहानियों में बंधुत्व का आग्रह है। मानवतावादी मूल्यों के पुनः निर्धारण की आकांक्षा है और भारतीयता के हक का स्वर सुनाई देता है। कबीर ने जिस सामाजिक न्याय और बंधुत्व की बात की थी और व्यक्ति को संबद्ध धर्म से मुक्ति दिलाई थी। भारतेंदु ने जिस भारतीयता की मांग की थी, प्रेमचंद ने समता के विचारों को रखा था–वह सारी वैचारिक संपदा विष्णुजी की कहानियों में विद्यमान है। दो विभिन्न सम्प्रदायों के मध्य प्रेम के विराट रूप का उद्घाटन किया है। विभेदकारी शक्तियों ने

निहित स्वार्थो के तहत मानवता की सदा हानि की है। संग्रह की सभी कहानियां देश–विभाजन की त्रासदी की पृष्ठभूमि में इसी मानवता की तलाश को रेखांकित करती है। 'भाई बहन', 'धरती मेरा वतन', 'मुरब्बी' या 'देशद्रोही' हों सभी में लेखक ने इस सत्य को उद्घाटित किया है कि साम्प्रदायिकता आदमी को आदमी से अलग करती है। धर्म और जाति के नाम पर समाज को बांटती है और परस्पर विद्वेष की आग प्रज्ज्वलित करती है जबकि इंसानियत दिलों को जोड़ती है। संग्रह की सभी कहानियों में हृदय–परिवर्तन, घृणा और विद्वेष पर प्रेम एवं सहानुभूति की विजय, मानव–मूल्यों को सम्मान देने की समर्थता तथा संवेदनशीलता देखी जा सकती है। साम्प्रदायिक एकता की भावना को बुलंदी पर पहुँचाने वाली ये कहानियाँ तथा एवं शिल्प के लिहाज से भी अत्यन्त सशक्त एवं प्रभावी हैं। संग्रह की एक कहानी 'भाई बहन' का उल्लेख करना चाहूँगी जिसमें ट्रेन के डिब्बे में सहयात्री के रूप में एक वयोवृद्ध मुस्लिम सज्जन और उसकी बेटी है जिसके पास हिंदू कथा–नायक का छोटा बेटा आकर खेलने लगता है। बेटी इस प्यारे खूबसूरत बच्चे को जो उसकी ओर प्यार भी मुस्कान के साथ देख रहा हैख् उठा लेती है। उसे बड़े चाव से केला छीलकर खिलाती है। माँ को अपने धर्म के संस्कार रोकते हैं। वह बच्चे को उठा लाने का संकेत करती है। पिता देखते है। पर उसे बुलाते नहीं। बच्चों के लिए छूत–छात का भेद नहीं होता। वह इतना ही देखते हैं कि लड़की उसे कितने प्यार से लिखला रही है। वह हिंदू है या मुसलमान, इसका विचार नहीं करते। अचानक शोर होता है कि 'अरे बच्चा गिर गया, ट्रेन रोको' लड़की खुले दरवाजे की ओर लपकी। वृद्ध ने चेन खींच दी। लड़की बचाते–बचाते खुद भी प्लेटफार्म पर गिर पड़ी। लोग कहने लगे 'लड़की हिम्मत वाली है। अपने भाई को बचा लिया।' (भाई–बहन की मुहब्बत का जबाव नहीं)। कथा नायक को अब चारों ओर भाई–बहन की आवाजें सुनाई दे रही थीं।

वरिष्ठ कथाकार उषा यादव की बालकथा साहित्य में एक विशेष पहचान है। उनकी कहानियों का फलक विस्तृत है। उषा यादव की एक कहानी 'खेल खेल' पर बड़ों के मंदिर–मस्जिद के झगड़े पर केन्द्रित है। बच्चे अबोध हैं और चाहकर भी यह नहीं समझ पाते कि बड़े ईंट और पत्थरों से बने इस प्रार्थना–स्थलों के लिए आपस में क्यों लड़ते हैं। दीपू और यूसुफ एक ही स्कूल में पढ़नेवाले दो दोस्त हैं ये दोनों बच्चे मिलकर मंदिर–मस्जिद का खेल खेलते हैं। दीपू की छत पर मस्जिद बनने लगती है और यूसुफ की छत पर मदिर। धीरे–धीरे सारे बच्चे अपनी–अपनी छतों से मंदिर और मस्जिद का खेल देखने पहुँच जाते हैं। यूसुफ की छत पर बने मंदिर में आरती गाई जा रही थीं–' ओम जय जगदीश हरे'। दीपू की छत पर बनी मंस्जिद में बच्चे जुम्मे की नमाज के बाद परस्पर गले मिल रहे थे। ये देखकर भीड़ पर घड़ों पानी पड़ गया। नादान बच्चों ने खेल–खेल में कितनी बड़ी बात समझा दी थी कि सभी धर्म बराबर और पूज्य हैं।

संदर्भ सूचीः–

1. आजकल, जुलाई–1997
2. आजकल, अगस्त–2008
3. आजकल, जनवरी –2011

LBP PUBLICATION